

श्री लक्ष्मी चालीसा

(Shri Lakshmi Chalisa)

॥ श्री लक्ष्मी चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा,
करो हृदय में वास ।
मनोकामना सिद्ध करि,
परुवहु मेरी आस ॥

॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास,
हाथ जोड़ विनती करुं ।
सब विधि करौ सुवास,
जय जननि जगदंबिका ॥

॥ चौपाई ॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरौ तोही ।
ज्ञान बुद्धि विधा दो मोही ॥

तुम समान नहीं कोई उपकारी ।
सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥

जय जय जगत जननि जगदम्बा ।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥

तुम ही हो सब घट घट वासी ।
विनती यही हमारी खासी ॥

जगजननी जय सिन्धु कुमारी ।
दीनन की तुम हो हितकारी ॥

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी ।
कृपा करौ जग जननि भवानी ॥

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी ।
सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥

कृपा दृष्टि चितववो मम ओरी ।
जगजननी विनती सुन मोरी ॥

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता ।
संकट हरो हमारी माता ॥

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो ।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो ॥ 10 ॥

चौदह रत्न में तुम सुखरासी ।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी ॥

जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा ।
रुप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा ।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं ।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥

अपनाया तोहि अन्तर्यामी ।
विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी ॥

तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आनी ।
कहं लौ महिमा कहौं बखानी ॥

मन क्रम वचन करै सेवकाई ।
मन इच्छित वांछित फल पाई ॥

तजि छल कपट और चतुराई ।
पूजहिं विविध भांति मनलाई ॥

और हाल मैं कहौं बुझाई ।
जो यह पाठ करै मन लाई ॥

ताको कोई कष्ट नोई ।
मन इच्छित पावै फल सोई ॥ 20 ॥

त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि ।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी ॥

जो चालीसा पढ़ै पढ़ावै ।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥

ताकौ कोई न रोग सतावै ।
पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै ॥

पुत्रहीन अरु संपति हीना ।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥

विप्र बोलाय कै पाठ करावै ।
शंका दिल में कभी न लावै ॥

पाठ करावै दिन चालीसा ।
ता पर कृपा करै गौरीसा ॥

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै ।
कमी नहीं काहू की आवै ॥

बारह मास करै जो पूजा ।
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ॥

प्रतिदिन पाठ करै मन माही ।
उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं ॥

बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई ।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥ 30 ॥

करि विश्वास करै व्रत नेमा ।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥

जय जय जय लक्ष्मी भवानी ।
सब में व्यापित हो गुण खानी ॥

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं ।
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहीं ॥

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै ।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥

भूल चूक करि क्षमा हमारी ।
दर्शन दजै दशा निहारी ॥

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी ।
तुमहि अछत दुःख सहते भारी ॥

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में ।
सब जानत हो अपने मन में ॥

रूप चतुर्भुज करके धारण ।
कष्ट मोर अब करहु निवारण ॥

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई ।
ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई ॥40॥

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी,
हरो वेगि सब त्रास ।
जयति जयति जय लक्ष्मी,
करो शत्रु को नाश ॥

रामदास धरि ध्यान नित,
विनय करत कर जोर ।
मातु लक्ष्मी दास पर,
करहु दया की कोर ॥

Shri Lakshmi Chalisa (in English)

॥ doha ॥

maatu lakshmee kari krpa,
karo dil mein vaas ॥
man siddh karee,
puruvalu meree aas ॥

॥ soratha ॥

yahee mor aradaas,
hast jod vinatee karun ॥
sab vidhi karau suvaas,
jay janani jagadambika ॥

॥ chaupae ॥

sindhu suta main sumirau tohee ॥
gyaan buddhi vigha do mohi ॥

tum samaan nahin koee upakaaree ॥
sab vidhi puravahu aas hamaaree ॥

jay jay jagat janani jagadamba ॥
prakrti tum hee ho avalamba ॥

tum hee ho sab ghatate ghatate vaasee ॥
vinatee yahee hamaaree vebasait ॥

jagajananee jay sindhu kumaaree ॥
deen kee tum ho hitakaaree ॥

vinavaun nity tumahin mahaaraanee ॥
krpa karau jag janani bhavaanee ॥

kehi vidhi stuti karaun tihaari ॥
sudhi leejai aparaadh bisaari ॥

krpaya drshti chitavvo mam ori ॥
jagajananee vinatee sun moree ॥

gyaan buddhi jay sukh ke daata ॥
sankat haro hamaaree maata ॥

ksheerasindhu jab vishnu mathaayo ॥
chaudah ratn sindhu mein paayo ॥10 ॥

chaudah ratnon mein tum sukharaasee ॥
seva kiyo prabhu bani daasee ॥

jab-jab janm jahaan prabhu leenha ॥
roop badal tahan seva keenha ॥

svayan vishnu jab nar tanu dhaara ॥
leenheu avadhapuree avataara ॥

tab tum pragat jenapur maaheen ॥
seva kiyo hrday pulakahin ॥

bhinn tohi antaryaamee ॥
vishv vidit tribhuvan ke svaamee ॥

tum sam prabal shakti nahin aanee ॥
kahan lau mahima kahaun bakhaanee ॥

man kram vachan karai sevakaee ॥
man maanga poora phal paaya ॥

taji chhal kapat aur chaturaee ॥
poojahin vividh bhaeechaare manalae ॥

aur haal main kahaun boobaee ॥
jo yah paath karai man lai ॥

taako koe kasht noee ॥
man chaahae paavai phal soee ॥20 ॥

traahi traahi jay duhkh nivaarini ॥
trividh taap bhav bandhan haarinee ॥

jo chaaleesa padhaee paavai ॥
dhyaan dhyaan sunai sunaavai ॥

taakau koe na rog sataavai ॥
putr aadi dhan sampatti paavai ॥

putraheen aru sampati heena ॥
andh badhir kodhi ati deena ॥

vipr bolaay kai paath karaavai ॥
sachcha dil mein kabhee na laavai ॥

paath karaavai din chaaleesa ॥
ta par krpa karain gaureesa ॥

sukh adhikaar bahut see paavai ॥
kamee nahin kaahoo kee aavai ॥

baarah maas karai jo pooja ॥
tehi sam dhany aur nahin dooja ॥

nity paath karai man maahee ॥
un sam koe jag mein kahoon nahin ॥

bahavidhi kya main karaun badaee ॥
ley pareeksha dhyaan do ॥30 ॥

kari vishvaas karai vrat nema ॥
hoy siddh upajai ur prema ॥

jay jay jay lakshmee bhavaanee ॥
sab mein vyaapt ho gun khaanee ॥

tummharo tej prataap jag maaheen ॥
tum sam kooo priy kahun nahin ॥

mohi anaath kee sudhi ab leejai ॥
sankat kati bhakti mohi deejai ॥

bhool chook karee kshama hamaaree ॥
darshan dajai dasa nihaaree ॥

bin darshan vyaakul adhikaaree ॥
tumahi achat dukkh sahate bhaaree ॥

nahin mohin gyaan buddhi hai tan mein ॥
sab jaanat ho apane man mein ॥

roop chaturbhuj dhaaran dhaaran ॥
kasht mor ab karahu seva ॥

kehi prakaar main karaun badaee ॥
gyaan buddhi mohi nahin moraee ॥

॥ doha ॥

traahi traahi dukkh haarinee,
haro vegi sab traas ॥
jayati jayati jay lakshmee,
karo shatru ko naash ॥

raamadaas dhari dhyaan nit,
vin karat kar jor ॥
maatu lakshmee daas par,
karahu daya kee kor ॥
